>

Title: Need to provide modern medical facilities in C.G.H.S. Dispansaries at Jabalpur.

**श्री राकेश सिंह (जबलपुर) :** मैं इसके लिए माफी चाहता हूं, आगे से मैं इसका ध्यान रखूंगा।

उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं आपके माध्यम से अपने संसदीय क्षेत्र की एक बहुत ही गंभीर समस्या की तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मेरा संसदीय क्षेत्र जबलपुर मध्य प्रदेश का एक प्रमुख शहर है। यहां पांच बड़े सुरक्षा संस्थानों के अलावा केन्द्र सरकार के कई बड़े कार्यालय भी मौजूद हैं, जिसके कारण यहां शासकीय कर्मचारियों की संख्या काफी अधिक है। लगभग 25 लाख की आबादी वाले जबलपुर शहर में सी.जी.एच.एस. के मात्र तीन स्वास्थ्य केन्द्र कार्यरत हैं, जिनमें आठ चिकित्सक ही नियुक्त हैं। जबकि इस योजना के कार्डधारियों की संख्या लगभग 25,283 है तथा इनके परिवार के सदस्य, जो इसके लाभार्थी हैं, उनकी संख्या लगभग 1,01,437 है। इन स्वास्थ्य केन्द्रों में उपचार कराने हेतु इतनी बड़ी संख्या में लोग आते हैं कि प्रतिदिन एक चिकित्सक के पास लगभग 150 मरीज पहुंचते हैं। इन सबकी जांच एक असंभव काम है। इसलिए प्रतिदिन सैंकड़ों लोगों को इलाज के अभाव में वापस लौटना पड़ता है। यदि पिछले कुछ वर्षों का रिकार्ड यदि देखा जाए तो वर्ष 2002 में वहां सी.जी.एच.एस. कार्डधारकों की संख्या 18500 थी और पिछले वर्ष 2006 में लगभग 21,879 थी, जबकि चिकित्सा केन्द्र मात्र तीन और चिकित्सकों की संख्या भी मात्र आठ ही थी। इससे स्पष्ट है कि इतने वर्षों में कार्डधारकों और लाभार्थियों की संख्या बढ़ने के बावजूद भी स्वास्थ्य केन्द्रों और चिकित्सकों की संख्या में आनुपातिक वृद्धि नहीं हुई है और मरीजों के स्वास्थ्य के साथ सीधे तौर पर खिलवाड़ किया जा रहा है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की वर्ष 2006-2007 की वार्षिक रिपोर्ट के आंकड़ों पर यदि गौर करेंगे तो यह स्पष्ट दीखता है कि अन्य शहरों जैसे नागपुर, अहमदाबाद आदि की तुलना में जबलपुर में केन्द्रीय सुरक्षा संस्थानों की संख्या अधिक होने के बावजूद भी बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देने में भेदभाव किया गया है।

उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से और सरकार से मेरा आग्रह है कि जबलपुर को उसका हक दिया जाए। इसके लिए यहां पर सी.जी.एच.एस. के अंतर्गत कम से कम तीन सर्वसुविधायुक्त डिस्पैन्सरीज और स्थापित की जाएं। शहर के मध्य एक पोलिक्लीनिक की स्थापना की जाए, जहां से चिकित्सकों द्वारा आवश्यकता पड़ने पर मरीजों को अन्य बड़े अथवा निजी चिकित्सालयों में रेफर किया जा सके। साथ ही आकस्मिक चिकित्सा हेतु 24 घंटे मोबाइल यूनिट शुरू की जाए तथा अन्य शहरों की भांति जबलपुर में ऐलोपैथी के अलावा होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी और प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र भी खोले जाएं, ताकि मरीज अपनी सुविधानुसार चिकित्सा पद्धति अपना सकें।